2 जून 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 43, अंक : 5
जून (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दिनांक 24 मार्च से प्रारम्भ हुए लॉकडाउन के कारण जैनपथप्रदर्शक का अप्रैल (प्रथम-द्वितीय) एवं मई (प्रथम-द्वितीय) अंक प्रकाशित नहीं हो पाया; अब जून (प्रथम) वर्ष 43 अंक 5 प्रकाशित किया जा रहा है।

लॉकडाउन के समय देशभर में ऑनलाइन शिविरों व कक्षाओं की धूम

देशभर में तत्त्वप्रचार की अनेक गतिविधियाँ समय-समय पर चलती रहती है, अनेक स्थानों पर शिविरों का आयोजन होता रहता है; परन्तु दिनांक 24 मार्च से प्रारम्भ हुये लॉकडाउन के कारण देश की सभी गतिविधियों के साथ धार्मिक गतिविधियाँ भी रुक गईं, सभी साधर्मीजन स्वस्थ रहने हेतु अपने घरों में रहने को बाध्य हो गये; फिर भी अनेक साधर्मियों ने ऑनलाइन शिविरों, गोष्ठियों, व्याख्यानों व कक्षाओं का आयोजन करके तत्त्वप्रचार के कार्य को निर्बाध बनाये रखने का प्रयास किया, जिसका संक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया जा रहा है -

ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी (भरत का अन्तर्द्वन्द) -

दिनांक 28 व 29 अप्रैल को '**भरत का अन्तर्द्वन्द**' विषय पर ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री संजयजी दीवान सूरत आदि महानुभाव उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **भरतजी का श्रावक धर्म** विषय पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द में समागत जिनेन्द्र भक्ति** विषय पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य में समागत प्रमुख सिद्धांत** विषय पर डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने, **दिग्विजय यात्रा का वर्णन** विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य का सामाजिक व राजनैतिक वैशिष्ट्य** विषय पर डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने, **भरतजी के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियाँ और निराकरण** विषय पर पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द काव्य का साहित्यिक वैशिष्ट्य** विषय पर डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा ने, **भरतजी घर में ही वैरागी कैसे?** विषय पर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने, **भरत-बाहुबली में भ्रातृ स्नेह** विषय पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने, **भरत का अन्तर्द्वन्द के मार्मिक स्थल** विषय पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने, **डॉ. भारिल्ल के भरत का व्यक्तित्व** विषय पर पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर ने अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण डॉ. गौरव सौगानी व श्रीमती परिणति जैन, संयोजन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं संचालन अच्युतकांतजी शास्त्री व जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित -

विश्व का सबसे बड़ा ऑनलाइन जैन ई ग्रुप शिविर

अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न

● 170 से अधिक शास्त्री विद्वान ● 128 कक्षाएं ● देश-विदेश के 13,126 विद्यार्थी ● भारत के अतिरिक्त 23 देशों के 238 विद्यार्थी ● 960 स्थानों से 6 भाषाओं में कक्षाओं का संचालन ● यूट्यूब पर प्रतिदिन 25 हजार व्यूज ● 4069 विद्यार्थियों ने प्रथम बार पाठशाला पढी ● 10,632 नये विद्यार्थी अहम् पाठशाला से जुड़े ● 30 I.T. Team Members द्वारा शिविर में सहयोग

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती के उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर व मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में अर्हं पाठशाला द्वारा विश्व का सबसे बड़ा ऑनलाइन जैन बाल शिक्षण ई ग्रुप शिविर दिनांक 10 से 17 मई तक आयोजित किया गया।

इसके विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

सम्पादकीय –

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

4

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

पिछले अंक में हमने पुद्गलों का परस्पर व्याघातरहित होना एवं वैज्ञानिक आविष्कारों में इसकी सिद्धि की चर्चा की थी, अब आगे...

(गतांक से आगे...)

(4) अनन्त परमाणु परस्पर व्याघात रहित –

अवगाहन शक्ति की अपूर्व सामर्थ्य जान लेने के पश्चात् भी चित्त में यह जिज्ञासा बनी रहती है कि एक ही क्षेत्र में मौजूद वे परमाणु क्या परस्पर में मिल जाते हैं? यदि नहीं भी मिलते हों तो परस्पर बाधक तो होते ही होंगे?

किन्तु वास्तविकता यही है कि वे परमाणु एक-दूसरे में मिलते भी नहीं है और एक-दूसरे के कार्य में बाधक भी नहीं बनते हैं। वे अनन्त परमाणु एक ही आकाश क्षेत्र में एकत्रित होने पर भी आपस में न मिलकर स्वाधीनपने अपना परिणमन करते हैं। पुद्गलों की इस प्रकार की अबाधितपने अवगाहन की शक्ति की चर्चा आज से लगभग 15-1600 वर्ष पूर्व आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने अपने सर्वार्थसिद्धि नामक ग्रन्थ में की है। वे इन पुद्गलों की अवगाहन शक्ति को व्याघात रहित बताते हुये लिखते हैं – '**अवगाहनशक्तिश्चैषामव्याहतास्ति**'[36]

वे परमाणु स्वतंत्र/अबाधित रहकर एक दूसरे में मिले बिना कैसे रह सकते हैं, इस बात को आचार्य अकलंकस्वामी ने स्थूल प्रकाश का उदाहरण देकर समझाते हुये लिखा है – '**एकापवरकेऽनेकप्रकाशावस्थान दर्शनादविरोधः**'[37] एक कोठे (कमरे) में अविरोध रूप से अनेक प्रकाशों का अवस्थान देखा जाता है। जैसे एक कमरे में बहुत से दीपकों का प्रकाश रह जाता है, न तो उससे क्षेत्र विभाग (भिन्न-भिन्न क्षेत्र) होता है और न एक प्रदेश में रहने से उन सब प्रकाशों का एकत्व होता है अर्थात् उनकी पृथक् सत्ता नष्ट नहीं होती है; उसी प्रकार एक प्रदेश में अनन्त स्कन्ध अतिसूक्ष्म परिणमन के कारण स्वभाव में सांकर्य हुए बिना ही रह सकते हैं।

आचार्य उमास्वामी तो लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर छहों द्रव्यों के अवस्थान की बात करते हुये लिखते हैं – **लोकाकाशेऽवगाहः**[38] अर्थात् सभी द्रव्य लोकाकाश में अवगाह (स्थान) पाते हैं। वे सभी द्रव्य एक दूसरे में प्रवेश करते हैं, एक दूसरे को अवकाश देते हैं, परस्पर मिल जाते हैं; तथापि अपने-अपने स्वभाव को कोई नहीं छोड़ता।[39]

आधुनिक विज्ञान के आविष्कारों में ही देखें तो एक छोटी सी पेनड्राइव अथवा किसी चिप में एकत्रित 10-15 जी.बी. डाटा अत्यन्त लघु क्षेत्र में रहने पर भी उसमें रहने वाली विविध प्रकार की फाईलें आपस में व्याघात रहित होती है। एक दूसरे में मिलती नहीं है। यदि उस चिप में कई फोल्डर हैं और सभी में अलग-अलग प्रकार का मैटर है, किसी फोल्डर में एकाउण्ट्स का डाटा है, किसी में संगीत है, किसी में पुस्तकें है, किसी में फोटोग्राफ है तो कोई भी फाईल किसी दूसरी फाईल में व्यवधान नहीं करती। सभी अपने-अपने में सुरक्षित रहती हैं। हम जो चीज देखना अथवा सुनना चाहें उसे देख/सुन सकते हैं। उस समय वहीं मौजूद अन्य विषय संबंधी परमाणु डाटा उसमें व्यवधान उत्पन्न नहीं करता। ये सब हम प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

इस प्रकार उक्त उल्लेखों एवं आगम प्रमाणों से न केवल यह सिद्ध होता है कि आधुनिक विज्ञान के आविष्कार जैन सिद्धान्तों को समझने में अत्यन्त सहायक हैं; अपितु यह कहने में भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि प्राचीन जैन आगमों में वर्तमान आविष्कारों के बीज छिपे हैं।

(क्रमशः)

36. सर्वार्थसिद्धि, 5/10 की टीका
37. तत्त्वार्थ राजवार्तिक, अध्याय-5, सूत्र-14, वार्तिक-4
38. तत्त्वार्थसूत्र, 5/12
39. पंचास्तिकाय संग्रह, गाथा-7

शोक समाचार

(1) बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्रीमती रूपारीबेन धर्मपत्नी स्व. श्री धूलजीभाई ज्ञायक का दिनांक 22 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा की माताजी थीं।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती रत्नप्रभा तोतुका धर्मपत्नी स्व. श्री सुरेशचंदजी तोतुका का दिनांक 6 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री अजितजी तोतुका की माताजी थीं। टोडरमल स्मारक में चलने वाली समस्त गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता है।

(3) उदयपुर मुमुक्षु मण्डल के अग्रणी, स्वतंत्रता सेनानी **उदयपुर (राज.) निवासी श्री सुजानमलजी गदिया** का दिनांक 9 मई को शांत-परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अनेक वर्षों तक मुमुक्षु मण्डल उदयपुर के मंत्री रहे। आपकी प्रेरणा से ही श्री कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति का गठन हुआ, जिसके माध्यम से अनेक बाल संस्कार शिविरों का आयोजन हुआ। आपके निमित्त से त्रिकालवर्ती जिनालय व पंचमेरु की भी रचना हुई।

(4) जलगांव (महा.) निवासी ब्र. पद्माबेन केशवलाल शाह का दिनांक 25 अप्रैल को 89 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री द्वारा ब्रह्मचर्य लेने वाली प्रथम बैंच की बहनों में से थीं।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

महाविद्यालय की ऑनलाइन गोष्ठियाँ

* 1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 19 अप्रैल को '**लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका**' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने की। कार्यक्रम में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत '**जैन सिद्धांत प्रवेशिका के सृष्टा का परिचय**' विषय पर स्वानुभव शास्त्री खनियांधाना ने, '**क्या युनिवर्स ही विश्व है?**' विषय पर शाश्वत जैन भोपाल ने, '**द्रव्य मात्र छः ही क्यों? कम या ज्यादा क्यों नहीं**'? विषय पर संयम जैन दिल्ली ने, '**द्रव्यों के अनंत गुणों का मिनटों में परिचय**' विषय पर संभव जैन दिल्ली ने, '**एक समय की पर्याय कैसी होती है**' विषय पर निखिल जैन फिरोजाबाद ने, '**आखिर द्रव्य–गुण–पर्याय जानने से लाभ क्या है**' विषय पर मयंक जैन बण्डा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण सहज शास्त्री पिड़ावा ने एवं संचालन समर्थ शास्त्री विदिशा व विनय शास्त्री मुम्बई ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज एवं निवेदक दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी व अंकित जैन भगवां रहे।

* 2. दिनांक 30 अप्रैल को '**अध्यात्मवेत्ता, कहान–महान**' विषय पर ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। कार्यक्रम में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत '**जीवन परिचय**' विषय पर अशेष जैन विदिशा ने, '**जीवन संबंधी प्रेरक प्रसंग**' विषय पर समर्थ जैन हरदा ने, '**प्रवचन अमृत से अध्यात्म–नवनीत**' विषय पर संयम जैन खनियांधाना ने, '**विद्वानों के अभिमत में गुरुदेवश्री**' विषय पर पवित्र जैन आगरा ने, '**यदि गुरुदेव ना होते तो**' विषय पर वैभव जैन ग्वालियर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण संदेश जैन दिल्ली ने, गीत प्रस्तुति सहज जैन पिड़ावा व समकित जैन ईसागढ ने एवं संचालन समर्थ शास्त्री विदिशा व विनय शास्त्री मुम्बई ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन व पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज रहे।

* 3. दिनांक 20 मई को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष की ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी '**जैन रामायण**' विषय पर आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की। कार्यक्रम में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. अरुणजी शास्त्री बण्ड जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल भी उपस्थित थे।

गोष्ठी के अन्तर्गत **रामायण के मुख्य पात्र राम का आध्यात्मिक परिचय** विषय पर सुष्मित जैन सेमारी ने, **सीताजी के सैद्धांतिक विचार** विषय पर संयम जैन दिल्ली ने, **पश्चाताप की सम्यकता रामायण में** विषय पर अभिषेक जैन देवराहा ने, **पद्मपुराण गर्भित उपकथाओं का संकेत** विषय पर पारस जैन भिण्ड ने, **तराजू में रामायण** विषय पर समकित जैन ईसागढ ने, **पुण्य का दुष्प्रयोग–नारायण व प्रतिनारायण** विषय पर सर्वज्ञ जैन बरगी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण केयूर जैन गढी ने एवं संचालन संयम पुजारी खनियांधाना व शाश्वत जैन भोपाल ने किया। गोष्ठी के ऑनलाईन तकनीकी सहयोगी पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन व पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज रहे।

समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब के **Pandit Todarmal Smarak Trust** चैनल पर प्रसारित किये गये।

ऑनलाइन धार्मिक कक्षाएं संचालित हुईं

ऑनलाइन कक्षाओं की शृंखला में पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, **देवलाली** के तत्त्वावधान में **जेनेक्स्ट** के सहयोग से दिनांक 27 अप्रैल से 9 मई तक ऑनलाइन धार्मिक कक्षाओं का आयोजन हुआ, जिसमें कुल 74 कक्षाओं के अन्तर्गत चार गति, मैं कौन हूँ, मेरी शक्ति मेरा वैभव, जानो अपने जीव को, सात तत्त्व, अनुयोग, पांच लब्धि, चार अभाव, सत् द्रव्य लक्षण आदि अनेक विषयों का अध्ययन कराया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, श्रीमती अनुप्रेक्षा शास्त्री आदि 14 विद्वानों द्वारा कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया गया। कार्यक्रम में दो बार शंका–समाधान का कार्यक्रम भी हुआ, जिसमें विद्वानों के माध्यम से बाल मन की शंकाओं का आगम के अनुरूप समाधान किया गया।

समस्त कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा हुआ।

कोरोना की घड़ी में जैनधर्म- गोष्ठी संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 8 मई को 'कोरोना की घड़ी में जैनधर्म' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री अगम जैन (ए.एस.पी.–जबलपुर), श्री संजय वासु (ए.डी.एम.–सिटी उदयपुर), पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, डॉ. अंकित जैन आदि के वक्तव्य का भी लाभ मिला।

कार्यक्रम का प्रसारण यूट्यूब के माध्यम से हुआ।

ऑनलाइन शिविर संपन्न

देवलाली ट्रस्ट के तत्त्वावधान में **जेनेक्स्ट** के सहयोग से विश्व का प्रथम ऑनलाइन बाल संस्कार शिविर दिनांक 17 से 22 अप्रैल तक आयोजित किया गया। प्रात: 7 बजे से रात्रि 10 बजे तक शिविर की गतिविधियाँ चली।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सौरभजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित समकितजी शास्त्री भोपाल, श्रीमती स्वस्ति जैन जबलपुर, श्रीमती श्रुति जैन खैरागढ, श्रीमती प्रज्ञा जैन टीकमगढ, श्रीमती श्रेया गाला मुम्बई, श्रीमती शिल्पी जैन मुम्बई आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन 28 कक्षाओं का आयोजन हुआ।

दोपहर में पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा सामूहिक कक्षा के माध्यम से अनेक वीडियो एनिमेशन एवं विभिन्न प्रमाणों के माध्यम से नैतिकता, देश भक्ति, हमारे कर्तव्य, हमारा खानपान और जैन सिद्धांतों का विशेष ज्ञान कराया गया।

रात्रिकालीन कार्यक्रमों में प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति के साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों व प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन 784 बच्चों ने ऑनलाइन परीक्षा दी और उन सभी को विशेष कार्यक्रम में पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

शिविर में देश–विदेश के ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अरिहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री अनंतराय अमुलखराय शेठ मुम्बई, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री प्रतीकभाई शाह अहमदाबाद, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने समय–समय पर शुभकामनाएं दीं।

इस कार्यक्रम का प्रसारण यूट्यूब चैनल **JAINEXT** और सोश्यल मीडिया के माध्यम से किया गया।

शिविर में देशभर से लगभग 1300 परिवारों ने और लंदन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, दुबई, फिनलैण्ड आदि देशों के जैन परिवारों के लगभग 150 बच्चों व उनके अभिभावकों ने लाभ लिया। इन्टरनेट तकनीक के विभिन्न माध्यमों से लगभग 20 हजार साधर्मियों ने इस शिविर में भाग लिया।

शिविर का निर्देशन श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया ने किया। पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के ट्रस्टियों ने इस शिविर के विद्वानों, सहयोगियों और सभी साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।

संपूर्ण कार्यक्रम विरागजी शास्त्री के नेतृत्व में देवांगजी शास्त्री मुम्बई, मंथनजी शास्त्री मुम्बई के विशेष सहयोग से एवं सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, महेशजी मलाड मुम्बई, श्रीमती किन्जल डेढिया मुम्बई, जिग्नेश भाई मलाड, आभास जैन पुणे आदि कार्यकर्ताओं के तकनीकी सहयोग से संपन्न हुआ।

स्पेशल सेमिनार फॉर यूथ संपन्न

ऑनलाइन कक्षाओं के क्रम में बेसिक स्वाध्याय ग्रुप दादर–मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 14 अप्रैल से 31 मई तक स्पेशल सेमिनार फॉर यूथ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सोमिलभाई विलेपार्ले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री विदिशा, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा, पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित विवेकजी मलाड, पण्डित बृजलालजी टोकर, पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई, मंगलार्थी सुलभ जैन झांसी, मंगलार्थी अनुभवजी जबलपुर का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का प्रसारण ज़ूम एप एवं यूट्यूब के माध्यम से किया गया।

ऑनलाइन व्याख्यान

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 6 अप्रैल से अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा '**प्रवचनसार**' पर तथा '**भरत का अन्तर्द्वन्द**' पुस्तक का ई–लोकार्पण करते हुए मार्मिक व्याख्यान हुये। इन व्याख्यानों के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल ने इस युग के प्रथम चक्रवर्ती क्षायिक सम्यग्दृष्टि भरत की मनोदशा का अत्यंत सरल व सुबोध भाषा में वर्णन किया। इसके अतिरिक्त ज्ञानी जीव का राग कैसा होता है, वर्तमान समय में अपने परिणामों को कैसे सम्हालें, आचार्य कुन्दकुन्ददेव का उपदेश आदि अनेक विषयों पर भी मार्मिक व्याख्यान हुये। इसी लॉकडाउन के समय में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं छहढाला ग्रंथ पर प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन हुए। पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा **मोक्षमार्गप्रकाशक** ग्रन्थ के आधार पर व्याख्यान हुए, जिसका संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। साथ ही दिनांक 29 मार्च से पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा भी **इष्टोपदेश एवं आत्मानुशासन** पर व्याख्यान हुये। पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा **भक्तामर** विषय पर कक्षाएं चलायी गई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय 1 (पीठबंध प्ररूपण)

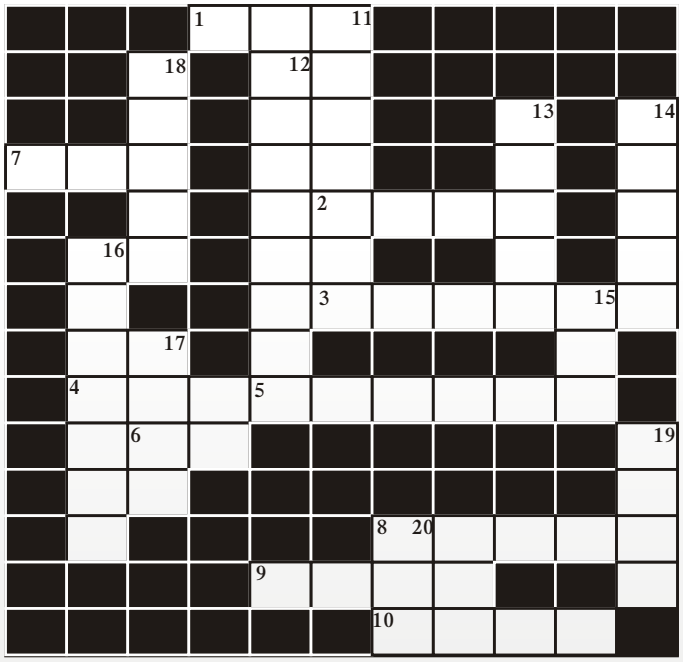

दाएं से बाएं –

1. संसार की उपमा, जिसमें समस्त जीव है
2. कषायों की मंदता से होने वाले परिणाम
3. जो महामंगलस्वरूप प्राकृत भाषामय है
4. जिन भावों का विज्ञान सिद्धों के ध्यान से होता है
5. काल अपेक्षा नमस्कार करने योग्य
6. धर्म के अंगों में सबसे ऊँचा
7. जो (टोडरमलजी के समय) मूढबिद्री नगर में दर्शनमात्र थे
8. संघ के नायक होने में जिसकी अधिकता कारण है
9. वर्तमान तीर्थ के नायक में से एक
10. पंचमकाल के केवली में से एक

ऊपर से नीचे –

11. अरिहंतादि का स्वरूप जिस मय है
12. जिस शास्त्र का उदय/उद्योत होता है
13. जिस एक ग्रथ का पं.टोडरमलजी को बुद्धिअनुसार अभ्यास था
14. 'अपनी बात' में उद्धत एक ग्रंथ
15. मं गालयति इति/मंग लाति इति
16. निंद्यभावों के चिह्न से रहित अरहंत का शरीर विशेष
17. समीपवर्ती भव्यों को अध्ययन कराने वाले
18. महान वक्ता का विशेष गुण
19. जिस नय से अक्षरार्थ किया जाता है
20. ग्रंथ का फल (जातैं मिलै..... सब)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 30 जून 2020 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

भेजने का पता– जैनपथप्रदर्शक ज्ञानपहेली, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15

वाट्सअप पर भेजने हेतु – 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

किशनगढ–अजमेर (राज.) : यहाँ हमीर कॉलोनी स्थित श्री महावीर जिनालय में दिनांक 18 व 19 मार्च को वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 18 मार्च को दोपहर में श्री शांति विधान एवं रात्रि में इन्द्रसभा का विशेष आयोजन हुआ; 19 मार्च को प्रात:काल घटयात्रा, वेदी–शुद्धि एवं यागमण्डल विधानपूर्वक प्रतिमाएं विराजमान की गईं। कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी विनयजी जैन 'पीतल फैक्ट्री', जयपुर द्वारा किया गया। समस्त कार्यक्रम श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार, किशनगढ के सान्निध्य में श्री राजेन्द्रजी चौधरी के निर्देशन में संपन्न हुए। विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित वीकेशजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांश जैन अलवर द्वारा कराये गये।

Covid-19 Jainism Camp

जयपुर (राज.) : यहाँ अर्हं पाठशाला द्वारा दिनांक 1 से 15 अप्रैल तक एक विशेष कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों द्वारा ज़ूम एप के माध्यम से प्रतिदिन विशेष कक्षाएं संचालित की गईं। डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा निश्चय–व्यवहार (भेद–प्रभेद, प्रयोग विधि), पण्डित सोनूजी शास्त्री 'इसरो' अहमदाबाद द्वारा अनेकान्त–स्याद्वाद, पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा हम हैं सच्चे जैनी, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा चौंसठ ऋद्धि विषय पर तथा पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली द्वारा समवशरण की रचना **PPT** के माध्यम से कक्षाएं संचालित की गईं तथा अन्तिम दिन परीक्षाएं ली गईं।

कैम्प का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन के सक्रिय सहयोग से हुआ।

दो विशेष सेमिनार संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ अर्हं पाठशाला द्वारा रविवार, दिनांक 29 मार्च को रात्रि में एवं सोमवार, दिनांक 30 मार्च को रात्रि में विशेष सेमिनारों का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा **''क्या करें अंत समय (कोरोना) में''** विषय पर तथा श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा **''एक नयी शुरुआत युवाओं के साथ''** विषय पर आकर्षक वक्तव्य प्रस्तुत किये गये।

हमें बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इनका लाभ **लगभग 50 हजार** लोगों ने **ptst** एवं **sanjeevgodha youtube** चैनल तथा अर्हं पाठशाला **Facebook Page** के माध्यम से लिया।

– आकाश शास्त्री, अमायन

... तथा राग–द्वेष–मोहरूप जो आस्रव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है, सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 227

विकल्पजाल में उलझे मरणान्तक व्यक्ति को सम्बोधन (4)

यह जीवन रहता है तो उत्तम है, पर यदि मृत्यु आती है तो आये, एक दिन तो आनी ही थी

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी आलेख से –

– ''...वह पल कभी भी आ सकता है और कब आ धमके यह कोई नहीं जानता, बस इसीलिये मैं सदा से ही इसके लिये तैयार ही था।''

–''...जब कभी भी आ सकती है तो कहीं ऐसा न हो बिना तैयारी के ही चल देना पड़े।''

–''...ज्ञाता–दृष्टा ही बने रहकर सबकुछ सहजरूप से स्वीकार करना ही योग्य है।''

–''...आखिर किसका विकल्प करूँ? जो छूट रहा है उसका या जिसका नवीन संयोग होने वाला है उसका?''

–''...लोग तो व्यर्थ ही अज्ञात के भय से ही भयभीत होते रहते हैं, पर मैं सोचता हूँ कि अज्ञात का भय ही क्यों, अज्ञात की प्रसन्नता भी तो हो सकती है न? जिज्ञासा भी तो हो सकती है न!''

–''...क्यों नहीं मैं आगत का स्वागत करूँ।''

–''...संयोग तो क्षणिक ही होते हैं और क्षणिक ही रहेंगे, यदि मुझे स्थायित्व चाहिये तो मुझे ही अपने आपको संयोगों से असंपृक्त (disconnect) करना होगा।''

–''...जब अनुकूल संयोग होते हैं, तब भी सुख–चैन कहाँ? तब मैं इस दुश्चिंता में उलझा रहता हूँ कि कहीं ये संयोग बिखर न जाएं। सच तो यह है कि ये संयोग मुझे सुखी–दु:खी करते ही नहीं।

मेरा सुख–दु:ख स्वयं मेरी अपनी वृत्ति पर ही निर्भर है।''

–''...एक अवस्था है जो बदलती हुई भी सदा एक समान ही रहती है–सिद्धदशा, अब तो मुझे उसी का पुरुषार्थ करना होगा।''

–''...स्वयं किये अशुभकर्मों की परवाह मात्र मृत्यु समीप देखकर ही क्यों?...''

–''कुछ संयोग भले ही मृत्यु के साथ मुझसे छूट जायेंगे पर मेरे अपने ये संस्कार तो मेरे साथ ही रहेंगे और मैं स्वयं तो हूँ ही हाजराहुजूर भगवान आत्मा।''

–''अब मेरा लक्ष्य तो पंचमगति (मोक्ष) है और मैं लगातार उस दिशा में आगे बढ रहा हूँ। रास्ते में सूखा हो, बंजर हो या वसंत हो, हरियाली हो, मुझे उससे क्या प्रयोजन?''

तो आखिर आज आ ही गयी यह मौत!

मुझे मालूम तो था ही कि एक न एक दिन तो यह आनी ही है।

मुझे तो यह भी अहसास था कि वह दिन, वह पल कभी भी आ सकता है और कब आ धमके यह कोई नहीं जानता। बस इसीलिये मैं सदा सही इसके लिये तैयार ही था।

मैं तैयार तो था, पर लालायित नहीं।

तैयार तो इसलिये था कि आनी तो है ही और जब कभी भी आ सकती है तो कहीं ऐसा न हो बिना तैयारी के ही चल देना पड़े।

और लालायित तो मैं जीवन के प्रति भी न रहा तो फिर मौत की लालसा कैसी? जब सबकुछ अपने नियमित क्रम में स्वयमेव ही होता है, चाहने से कुछ मिलता नहीं, रोकने से रुकता नहीं और टालने से टलता नहीं तो किसकी लालसा करूँ? ज्ञाता–दृष्टा ही बने रहकर सबकुछ सहजरूप से स्वीकार करना ही योग्य है।

आज मुझे परेशान करने वाला कोई विकल्प भी मेरे चित्त में नहीं है।

आखिर किसका विकल्प करूँ?

जो छूट रहा है उसका या जिसका नवीन संयोग होने वाला है उसका?

जो छूट रहा है उसके विकल्प का तो प्रयोजन ही क्या है? मैं न तो उसका कर्ता हूँ और न ही भोक्ता, उसका तो मैं ज्ञाता भी नहीं बन पाऊँगा, तब इस सबसे तो मेरा क्या नाता और क्या प्रयोजन रहा।

अब जहाँ मैं जा रहा हूँ वह तो मुझे ज्ञात ही नहीं, तब विकल्प किसका करूँ, ध्यान किसका करूँ, उसके भी विकल्प का क्या प्रयोजन हो सकता है।

मेरा सौभाग्य कि मुझे इस जीवन में सज्जन और अनुकूल सहयात्री मिले, यदि ऐसा न भी होता तो क्या? सभी तो समान नहीं होते हैं न?

इस जीवन में भी मैंने कितनी यात्राएं कीं, कितने और कैसे–कैसे लोग मिले, अत्यंत सज्जन और अनुकूल भी तथा दुर्जन भी।

क्या फर्क पड़ा?

यात्रा का थोड़ा सा ही वक्त तो काटना था, सो कट गया। बाद में तो न अनुकूल याद रहे और न प्रतिकूल।

आखिर कोई कितनों को याद रख सकता है? मिलते तो अनेकों हैं।

अब इस भव वन में भ्रमते हुए अनादि से कितने रिश्ते बने और टूटे, आज मैं किसे पहिचानता हूँ? कल ये सब भी विस्मृत हो जायेंगे। ये मेरे लिये अनजान हो जायेंगे और मैं इनके लिये।

अब किससे क्या मोह रखूँ?

जगत के लोग तो व्यर्थ ही अज्ञात के भय से ही भयभीत होते रहते हैं, पर मैं सोचता हूँ कि अज्ञात का भय ही क्यों, अज्ञात की प्रसन्नता भी तो हो सकती है न? जिज्ञासा भी तो हो सकती है न!

क्या मैं अपने विगत जीवन के भावों और क्रियाकलापों के आधार पर इतना भी अनुमान नहीं कर सकता हूँ कि मेरा भविष्य तो उज्ज्वल ही है, तब क्यों नहीं मैं आगत का स्वागत करूँ।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वर्तमान में मेरे जीवन में अनुकूलताएं हों या प्रतिकूलताएं, और इसी तरह भविष्य में (अगले जन्म में) भी मुझे अनुकूलताएं मिलें या प्रतिकूलताएं – ये दोनों ही बातें मेरे लिये महत्वपूर्ण नहीं हैं; क्योंकि ये सब संयोग तो क्षणिक हैं, प्रतिपल ही तो बदलते रहते हैं। यदि कोई संयोग मुझे अनुकूल लगता है तो अभी मैं उसका उपभोग भी नहीं कर पाता हूँ और वह बदल जाता है। ठीक इसी तरह प्रतिकूल संयोग भी; अभी मैं उनसे निपटने की योजना ही बना रहा होता हूँ और वे स्वयमेव ही बदल जाते हैं।

उक्त के विपरीत यदि मैं शुभ संयोगों को जुटाने और अशुभ संयोगों को मिटाने का प्रयास करता हूँ तो समस्त प्रयास निष्फल ही होते हैं, तब मेरे पास करने को रह ही क्या जाता है?

क्या यह मेंढकों को तोलने जैसा कार्य नहीं है?

संयोगों की यह क्षणिकता ही मेरी आज की ज्वलंत समस्या है।

दरअसल तो यह कथन भी सही नहीं है, संयोग तो क्षणिक ही होते हैं और क्षणिक ही रहेंगे। यदि मुझे स्थायित्व चाहिये तो मुझे ही अपने आपको संयोगों से असंपृक्त (disconnect) करना होगा।

अब देखो न! जब अनुकूल संयोग होते हैं तब भी सुख–चैन कहाँ? तब मैं इस दुश्चिंता में उलझा रहता हूँ कि कहीं ये संयोग बिखर न जाएं।

सच तो यह है कि ये संयोग मुझे सुखी–दुःखी करते ही नहीं।

मेरा सुख–दुःख स्वयं मेरी अपनी वृत्ति पर ही निर्भर है। यदि मैं सकारात्मक वृत्ति वाला हूँ तो प्रतिकूल संयोगों में भी इस विचार से ही संतुष्टी पा लेता हूँ कि ये दिन हमेशा थोड़े ही रहेंगे, कभी तो बदलेंगे।

सच पूछा जाये तो मेरा समस्या अनुकूल या प्रतिकूल संयोग हैं ही नहीं, मेरी सबसे बड़ी समस्या तो संयोगों की अस्थिरता है, यदि संयोग ही शाश्वत हो जाएं तो मैं एकबार पुरुषार्थपूर्वक इष्ट संयोग जुटा लूं और फिर हमेशा के लिये सुखी हो जाऊँ।

संयोग स्थिर न हों तो न सही, एक अवस्था है जो बदलती हुई भी सदा एक समान ही रहती है–सिद्धदशा, अब तो मुझे उसी का पुरुषार्थ करना होगा।

यदि कदाचित् प्रसंगवश मेरे जीवन में मुझे कुछ अशुभकार्य हो ही गये हैं, जिनसे निश्चित ही अशुभ कर्मों का बंध हुआ है, तो यह तो मैं तब भी जानता ही था कि इन भावों का फल क्या होगा, जब जानबूझकर ही मैंने यह सब किया है तो अब उनके फल से बचने की बेईमानीभरी निरर्थक चाहत भी क्यों हो?

फिर एक बात और

स्वयं किये अशुभकर्मों की परवाह मात्र मृत्यु समीप देखकर ही क्यों?

क्या अशुभकर्म इस जन्म में ही प्रतिफलित नहीं हो सकते हैं?

हुए ही होंगे न? हालांकि मैं यह नहीं जान सकता हूँ कि वर्तमान में उदय में आया कर्म कब बंधा था? पर इससे क्या?

संसार की व्यवस्था भी तो देखिये! जिस प्रकार की आधि–व्याधियाँ आती हैं, उनको झेलने में सक्षम संहनन भी स्वत: ही मिल जाता है, यदि नरकों में भयंकर मारकाट है तो वहाँ उससे निपटने में सक्षम वैक्रियक शरीर भी विद्यमान है।

अब इस जीवन में भी मैंने क्या कम कष्ट सहे हैं, पर मैं उन्हें बर्दाश्त तो कर ही गया न? उन कष्टों ने मेरे जीवन को क्या हानि पहुंचायी? मैं मर तो नहीं गया न!

यदि मर भी जाता तो क्या बिगड़ जाता, जब तक यह संसार है, तब तक यह जीवन–मरण तो चलता ही रहेगा। इससे बचने का एकमात्र उपाय तो अपने स्वरूप में स्थित होना ही है। इस जीवन में मैंने इस ओर कदम बढाये भी हैं।

यदि कुछ और आगे बढ सका होता तो उत्तम होता, पर यदि यह नहीं भी हो सका तो क्या फर्क पड़ता है, अन्य कुछ संयोग भले ही मृत्यु के साथ मुझसे छूट जाएंगे, पर मेरे अपने ये संस्कार तो मेरे साथ ही रहेंगे और मैं स्वयं तो हूँ ही हाजराहुजूर भगवान आत्मा।

अब मेरा लक्ष्य तो पंचमगति (मोक्ष) है और मैं लगातार उस दिशा में आगे बढ रहा हूँ। रास्ते में सूखा हो, बंजर हो या वसंत हो, हरियाली हो, मुझे उससे क्या प्रयोजन?

अस्तु!

तत्त्वोपदेश शिविर संपन्न

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, केवलज्ञान टी.वी., पंच बालयति जिनालय साधना नगर एवं **YJP (Young Jain Professionals)** के आयोजकत्व में दिनांक 1 से 3 मई तक ऑनलाइन तत्त्व–उपदेश शिविर आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला। शिविर में 15 देशों व भारत के विभिन्न नगरों से लगभग 30 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया। शिविर का संयाजन व संचालन पण्डित सौरभ–गौरवजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के 131वें जन्मदिवस (उपकार दिवस) के अवसर पर –

उपकार दिवस पर ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के 131वें जन्मदिवस (उपकार दिवस) के अवसर पर पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा दिनांक 25 व 26 अप्रैल, 2020 को 'गुरुदेवश्री का जीवन दर्शन' विषय पर राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की गई।

दिनांक 25 अप्रैल को सर्वप्रथम अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आशीर्वचन के अतिरिक्त डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा एवं मंगलाचरण डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा किया गया।

दिनांक 26 अप्रैल को ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा द्वारा गुरुदेवश्री पर कविता प्रस्तुत की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, मंगलाचरण पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर द्वारा एवं प्रासंगिक गीत विरागजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का निर्देशन पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, संयोजन पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, संचालन पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई व पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया। गोष्ठी के लाइव प्रसारण हेतु समस्त तकनीकी सहायता **JAINEXT** संगठन मुम्बई के सदस्य पण्डित सुदीपजी शास्त्री एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री द्वारा उपलब्ध करायी गयी। लगभग 10 हजार साधर्मियों ने इस ऑनलाइन गोष्ठी का लाभ लिया। संगोष्ठी का लाइव प्रसारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर एवं चैतन्यधाम ट्रस्ट, अहमदाबाद के चैनल द्वारा किया गया।

विश्वविख्यात विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिन –

संकल्प दिवस मनाया

विश्वविख्यात विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जन्मदिन 25 मई को प्रतिवर्ष 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर इस दिन प्रात:काल 9 बजे ऑनलाइन पूजन के पश्चात् आयोजित ऑनलाइन सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा थे। मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली रहे।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. सीमा जैन उदयपुर ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न विद्वत्गणों व श्रेष्ठियों ने भी वीडियो के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति की। तत्पश्चात् डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन के पश्चात् सभी विद्वत्गणों व साधर्मियों को आत्मकल्याण एवं आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में ऑनलाइन उपस्थित अतिथियों के वक्तव्य के उपरांत अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अभी तक तो शास्त्री विद्वानों को ही तत्त्वप्रचार का संकल्प दिलाया जाता था, परन्तु इस वर्ष विद्वानों के साथ-साथ श्रेष्ठीवर्ग एवं अनेक साधर्मियों ने भी आत्मकल्याण एवं आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प ग्रहण किया है।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर एवं संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

यह पहला प्रसंग था, जब बड़े दादा इस अवसर पर उपस्थित नहीं थे, अत: परिवार की ओर से श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल ने एवं स्नातक परिषद की ओर से डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने माल्यार्पण एवं तिलक द्वारा छोटे दादा का सम्मान किया।

मोक्षमार्गप्रकाशक व पुरुषार्थसिद्ध्युपाय Live

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दिनांक 12 मार्च से प्रतिदिन प्रात: 9.20 पर मोक्षमार्गप्रकाशक Live एवं दिनाक 26 मई से रात्रि में 8.00 बजे पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रंथ पर Youtube के drsanjeevgodha चैनल पर प्रवचनों का Live प्रसारण नियमित हो रहा है, जिसका लाभ हजारों लोग ले रहे हैं।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2020

प्रति,